Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 12/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

Evaluation of Psychodynamic model

यद्धपि मनोगत्यात्मक मॉडल की लोकप्रियता अधिक है और इसे एक विस्तृत एवं क्रान्तिकारी मॉडल माना गया है, तथापि इस मॉडल की निम्न परिसीमाएँ है।

(१)कुछ मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि रोगको संक्रय ऐसे हैं जिनके अर्थ अस्पष्ट है तथा जिन्हें मापन कतिन है एवं वैज्ञानिक रूप से जाँच पाना भी संभव नहीं है। अहं (ego) उगाई (ld), परा (super ego), अचेतन अभिप्रेरण (unconscious motivation) तथा दमन आदि ऐसे ही संप्रत्यय हैं। बेले एवं शेमरिन (Blay & shivrin, 1998) ने यह ची मा जाहिर किया है कि हाल में ही प्रामडियन व्यक्तित्व संप्रत्ययों को मॉपने के लिए जो प्रविधियाँ (techniques) विकसित की सही है ये भी काफी अविश्वसनीय एवं अवैध हैं। फलतः उनपर आधारित नैदानिक उपचार के प्रभाव शक के मेरे में आ जाते हैं।

(2) मनोगाव्यात्मक मॉडल में मामय के स्वरूप के नकारात्मक पहलू (Negative aspects) पर जैसे लैंगिक एवं आक्रामक मूलप्रवृतियों पर अधिक बल डाला गया है जबकि आंतरिक वर्द्धन, अनाःशक्ति (growth potential) तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों पर बल नहीं डाला है जो दुर्भाग्यपूर्ण है।

(3) जुरोधिक (Jurjevich, 1974) ने गत्यात्यम मॉडल को एक झाँसा पट्टी या चकमा (hoax) कहा है क्योंकि यह एक ऐसा बंदहभ (close system) है जो परस्पर विरोधी ऑकड़ा से भी प्रभावित नाहीं होता है और परिणाम चाहे जैसा भी हो, उसके आधार पर फ्रायडियन नियमों की संपुस्टि की जा सकती है। जैसे यदि कोई मनोविश्लेषक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि अगर किसी व्यक्ति में विद्वेष (hortility) का अचेतन भाव है तो उसके द्वारा किया गया विद्वेषपूर्ण व्यवहार को अचेत्तन के इस आवेग का एक सबूत माना जा सकता है। परन्तु यदि यह शांतिपूर्ण एवं दोस्ताना व्यवहार करता है तो उसे भी इस मॉडल के अनुसार उसके अचोतन के विद्वेषभाव का सभूत माना जा सकता है क्योंकि ऐसी अवस्था में उसके शांतिपूर्ण एवं दोस्ताना व्यवहार को एक प्रतिक्रिया निर्माण (reaction formation) के रूप में देखा जा सकता है।

(4) मनोगत्यात्मक मॉडल में व्यवहार पर अचेतन अभिप्रेरक एवं संबंधित मनोविकृत्ति (Psychopathology) की व्याख्या में जरूरत से ज्यादा बल डाला गया है जिसे कुछ कुछ मनो वैज्ञानिकों ने अनावश्यक एवं वेतुका बतलाया है। जैसे एक व्यक्ति जिसे आसानी से सफलता मिल जाती है या उस चीज की उपलब्धि हो जाती है जिसे वह सामान्यतः चाहता है, को यह जानकर तकलीफ हो सकता है कि वह ऐसा व्यवहार करके अपने भीतर छिपे अपूर्णता के अचेतन भाव की क्षतिपूर्ति कर रहा है।

(5) कुछ विशेषज्ञों जैसे भीड़ (mead] 1928) लिण्डस्मीय एवं स्ट्रॉस (Lindermith & Strauss] 1950) का मत है कि व्यवहार की व्याख्या करने के लिए जो मनोविश्लेषणात्मक संप्रत्यय विकसित किये गये हैं, वे सार्वजनिक (universal) नहीं हैं। इन लोगों का मत है कि वियाना (Vienna) के उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के परिवारों से आनेवाले रोगियों से प्राप्त अनुभूतियों के आधार पर फ्रायड ने इन संप्रत्ययों को विकसित किया था। अतः इसकी उपयोगिता इस संस्कृति तक एवं ऐसे ही सामाजिक आर्थिक स्तर के लोगों तक सिमित है।

(6) चेसलर (Clesler, 1970, 1975) ने कहा है कि फ्रायड द्वारा प्रस्तुत मनोगत्यात्मक मॉडल के वर्णन से यह स्पष्ट पता चलता है कि वे महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रहित (Prejudiced) थे। शायद यही कारण है कि उनके द्वारा प्रदत मानव विकास की व्याख्या को कई मनोवैज्ञानिकों ने अस्वीकृत कर दिया है।

(7) मनोगात्यात्मक मॉडल में वयस्क व्यवहार की व्याख्या वाल्यावस्था की अनुभूतियों के रूप में की गई है। इस तथ्य से मानव व्यवहार पर परिस्थितिजन्म एवं समकालीन कारकों (Contemporary factors) के पड़ने महत्वपूर्ण प्रभावों की कोई व्याख्या नहीं हो पाती है जो दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि सच्चाई यह है कि ऐसे कारकों का भी प्रभाव मानव व्यवहार पर पड़ता है। यही कारण है कि नवफ्रायड वादियों (Neo Freudians) जैसे फ्रोम (Fromm), एडलर, (Adler), सुलिभान (Sullivan) तथा होर्नी आदि ने ऐसे कारकों को अपने अपने सिद्धान्तों में व्यवहार का काफी महत्वपूर्ण निर्धारक माना है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के वावजूद भी मनोगत्यात्मक मॉडल का महत्व कम नहीं हुआ हे। आज भी सभी नैदानिक मनोवैज्ञानिक इस मॉडल के प्रावधान के अनुसार मानव व्यवहार की व्याख्या तथा असामान्य व्यवहार के उपचार पर बल डालते है।